ओमशान्ति। बच्चों ने गीत सुना। भगवान को गरीब निवाज़ भी कहते हैं; क्योंकि कहते हैं, गाया जाता है भारत कंगाल हो गया है। जो भारत डबल सिरताज था, पवित्रता का भी ताज था, जिसको होली ताज कहा जाता है। पवित्रता को होली कहा जाता है अथवा इसको लाइट का ताज भी कहा जाता है। सफेद लाइट का ताज पवित्रता की निशानी है। तो लाइट मिलती है बाबा के साथ योग रखने से। शिवबाबा सन्मुख समझा रहे हैं ब्रह्मा तन से। दो सोल्स का एक शरीर में होना कोई मुश्किल बात नहीं है। ब्राह्मणों को जब खिलाया जाता है तो आत्मा को बुलाया जाता है। ऐसे नहीं, आत्मा शरीर से निकल कर कोई आती है। यह तो जिस2 भावना से जो करते हैं तो बाबा कहते हैं मैं उनकी आश पूर्ण करता हूँ। यह पितरों को बुलाने करने का भारत में ही रिवाज़ है। भारत में ही परमपिता प॰ ब्रह्मा के तन में आते हैं, तो दो सोल का पार्ट हो गया। यह कोई बड़ी बात नहीं। तीर्थों पर जाते हैं, श्राद्ध खिलाते हैं, तो आत्मा का आवाहन करते हैं। आत्माओं को बुलाते हैं। यह भारत में पुरानी रसम है। आगे आत्माएँ आती थीं, बोलती थीं। उनसे सब कुछ पूछते थे। फिर उनके निमित्त कुछ करते हैं; क्योंकि समझते हैं आत्मा को मिलता है। बाबा कहते हैं उनका आशा पूरी करने लिए सा॰ कराए देता हूँ। जैसे स्टार होता है वैसे आत्मा की चमक होती है। कोई2 बहुत प्रेम से बुलाते हैं। समझो, कोई स्त्री अपने पति के सोल को बुलाती है, तो बाबा उनको ... ब्राह्मण में पति का सा॰ भी कराए देते हैं। जैसे देवताओं के अनेक प्रकार की मूर्तियाँ हैं। वो हैं तो नहीं; परन्तु सा॰ चेतन में कराते हैं। कृष्ण का भी चेतन में सा॰ होता है। वो ड्रामा में पहले से ही नूँध है जो होता है। तो यह पितर बुलाने की रसम भारत में ही है। यह है सभी सा॰। जो जैसी भावना रखते हैं उनका फल बाबा दे देते हैं। भक्ति का फल देते हैं ना। अगर सा॰ न करावें, फल न दें तो कोई भक्ति भी न करे; क्योंकि ज्ञान तो मिलना नहीं है। तुम बच्चे जानते हो आधाकल्प भक्तिमार्ग चलता है, जिससे अल्पकाल के लिए फल मिलता है। अभी तो हम भक्ति करते नहीं; क्योंकि जानते हैं भक्ति माना दुर्गति। दर–दर भटकते हैं। भगवान से मिलने लिए धक्का खाते हैं। वो तो कृष्ण को भी भगवान .... राम को भी, विष्णु को भी भगवान कह देंगे। बाबा के पास समाचार आया था, एक सेन्टर पर आर्यसमाजी आता है। उनको ज्ञान बुद्धि में बैठ गया है। अब उनके और सभी समाज वाले कहते ईश्वर सर्वव्यापी है। यह कहे– नहीं, वो तो बेहद का बाप एक ही है। तो इनका जो बड़ा था, उसने कहा– अगर तुम सर्वव्यापी ज्ञान को न मानते हो तो इस समाज को छोड़ दो। ऐसे बहुत कटर(कट्टर) होते हैं। भक्ति है ही धक्के खाने का मार्ग। सतयुग–त्रेता में यह होते नहीं। यह ज्ञान भी अभी सिखलाया जाता है। एक है हठयोग ऋषि, दूसरे हैं राज्य योग ऋषि। हठयोग आधा कल्प चला आता है। फायदा कुछ भी नहीं। इस राज्य योग से हमको 21 जन्मों का वर्सा मिल जाता है। हठयोग और राज्य योग, दोनों को देखेंगे तो साहमी का पुर यह नीचे रहेगा। भल दूसरे तरफ कितने भी शास्त्र आदि डालो तो भी उठ न सकेंगे। यह राज्य योग बाप ही सिखलाते हैं, जिसको गीता का भगवान कहा जाता है। वो स्वर्ग की स्थापना करते हैं, जिस स्वर्ग में पद पाने लिए तुम फिर से पुरुषार्थ करते हो। ड्रामा के राज़ को भी समझना है। तुम जानते हो गीता का भगवान शिव है, न कि कृष्ण। ज्ञान का सागर कृष्ण को नहीं कहा जाता। वो है परमपिता प॰ निराकार शिव, चेतन, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप। तो बीज में ज़रूर नॉलेज होनी चाहिए। गीता में कृष्ण का नाम डालने से उनकी महिमा सारी खतम कर दी है। गीताएँ भी फिर अनेक हैं। और जो भी वेद,उपनिषद,बाइबल आदि शास्त्र हैं वो एक ही प्रकार के होते हैं और एक का ही उच्चारा हुआ होगा। ..... भी एक प्रकार का होगा। गीताएँ तो अनेक हैं। गाँधी गीता, ज्ञानेश्वर गीता, विवेकानन्द गीता। अनेक गीताएँ बनाई हुई हैं। और शास्त्र अनेक प्रकार के नहीं बनाए जाते हैं। गीता तो है भगवान की गाई हुई;

परन्तु अर्थ सभी अपना2 कर देते हैं। ज्ञानेश्वर गीता, अष्टावक्र गीता भी है। अब ज्ञानेश्वर एक सन्यासी मनुष्य था। पहले वो गृहस्थी था फिर सन्यास ले लिया। उनको बच्चा था नहीं। एक बार सन्यास ले फिर गृहस्थ में आना, इसको वो नालायक समझते हैं। बहुत बदनामी हो पड़ती है। तो उनको स्त्री ने कहा– तुमने सन्तान तो दिया नहीं, फिर कुल की वृद्धि कैसे होगी? तो उसने एक शास्त्र में लिखवाए दिया कि पुरुष को एक बच्चे का दान दे फिर सन्यास लेना चाहिए। कोई ने उनको भड़काया होगा। सो गई पति के गुरु पास, जाकर कहा– फलाणे शास्त्र में लिखा हुआ है स्त्री को बच्चा न देने से उनके कुल का विनाश हो जावेगा, वृद्धि होगी नहीं। कुल की मल्टीप्लीकेशन होती है (ना), जिसको सिजरा कहा जाता है। जैसे यह भी मनुष्य सृष्टि के अनेक धर्मों का सिजरा है। तो स्त्री ने गुरु को जाकर शास्त्र का प्रमाण दिया। बोला, इसने बच्चा दान देने बिगर सन्यास कर लिया है। तो गुरु ने कहा– यह बात तो इनकी ठीक है। उनके पति को कहा, तुमको जाना होगा, एक बच्चा दान दे फिर सन्यास करना। उसने कहा, सभी कहेंगे इनको काम चेष्टा हुई है जो फिर स्त्री पास आया है। गुरु बोले, यह शास्त्रों का कायदा है, मैं फरमान करता हूँ इनको बच्चा देकर आओ। तो यह खराबी हुई ना। तो वो वापिस आया। कोई2 बड़े घर के भी होते हैं। कोई राजा सन्यास कर और फिर लौट आए तो सभी क्या कहेंगे! तो उनको सभी कहने लगे, यह क्या तुम सन्यास कर फिर आए हो! बहुत सहन करना पड़ा। एक दिन उनको बाप का पितर खिलाना था। ब्राह्मणों के पास गया तो वो बोले, हम नहीं चलेंगे। तुम सन्यास धारण कर फिर स्त्री पिछाड़ी आए हो; इसलिए हम तुम्हारे पितर खाए नहीं सकते। फिर वो अपने गुरु पास गया। बोला, सभी दुश्मन हो गए हैं, ब्राह्मण पितर नहीं खाते तो गुरु ने कहा– तुम ही पितर खिलाओ, आप ही पितर आ जावेंगे। फिर दिखाते हैं वो खुद ही बैठ गया। उनको श्रद्धा से पितर खिलाए खाना किया। स्त्री को बच्चा देकर जाकर सन्यास धारण किया। तो शास्त्रों में बात आ गई ना। हमारे पास भी बहुत हैं, शादी की है, बच्चा नहीं हुआ है। तो ज्ञान ले फिर विकार में तो जा न सके। तो मनुष्य कह देते– फलाणी गीता में यह लगा हुआ है, बच्चा देने बिगर तुमको निर्विकारी बनने का पुरुषार्थ न करना चाहिए। बच्चा दे फिर सन्यास करना चाहिए। ऐसे2 शास्त्रों की बात पकड़ लेते हैं। कितनी बातें बैठ बनाई हैं। गीता भी झूठी बैठ बनाते हैं; क्योंकि इस समय का नाम–रूप, देश–काल तो सभी बदल जाता। सतयुग–त्रेता में न यह शास्त्र होते, न ज्ञान होता। फिर कैसे बनावें? तो धुके(तुक्के) पर बना देते हैं। कुछ न कुछ आसार तो रहते हैं ना। यहाँ के(की) सभी झूठी गीताएँ भी जो नीचे चली जाती हैं वो भी निकले(ली) हैं। सभी भाषाओं में गीताएँ ज़रूर निकलेंगी। हमारी तो निकल न सके। हमारी गीता सिर्फ भारत की भाषाओं में ही निकलती है। वो झूठी गीताएँ अनेक हैं। वो भी ज़रूर निकलेंगी, तब तो बाबा को सच्ची गीता सुनाने आना पड़े। महाभारत में लड़ाई आदि दिखाई है, सो तो कुछ भी है नहीं। तुम तो हो डबल नॉन वाइलेंस। तुमको न काम–कटारी चलानी है, न कोई हथियार चलाना है। तो शास्त्रों की बात को भी मनुष्य उठाए लेते हैं कि बच्चा देकर फिर सन्यास करना चाहिए, नहीं तो कुल का विनाश हो जावेगा। तो अभी बाप समझाते हैं, विनाश तो सभी का होना है। सभी कुछ खलास होने हैं। विनाश सामने खड़ा है। वर्सा तो कोई पाए न सकेंगे। लड़ाई लगेगी फिर बंद भी होगी; क्योंकि जब तक पूरी राजधानी स्थापन न हुई है तब तक फाइनल लड़ाई, कुदरती आपदाएँ आदि न आवेंगी। थोड़ी बहुत आती रहेंगी। जब राजधानी स्थापन हो जावेगी तो हम समझ जावेंगे कि अब बहुत बच्चे, बहुत प्रजा बन गई हैं। अभी काम पूरा हुआ। राजधानी तो यहाँ ही होती है। और सभी धर्म स्थापन करते हैं, न कि राजधानी। यह है नई दुनिया। तो फिर से देवी–देवताओं की राजधानी स्थापन होती है। तुम मनुष्य से देवता बनते हो। राजा–राणी, प्रजा उनमें भी हल्की प्रजा, साहुकार प्रजा सब बनेंगे। सुदामा का मिसाल है ना, उनको महल दिखाए;

क्योंकि यह ज्ञान है प्रत्यक्ष फल देने वाला। झट सा॰ होता है। महल देखो, गोद में प्रिन्स देखो। इसको प्रत्यक्ष फल कहा जाता है। बरोबर इम्तहान पास कर फिर झट जाकर प्रिन्स बनेंगे। कोई विद्या दान करते हैं तो दूसरे जन्म विद्या जास्ती रहती है। यह ज्ञान तो अथाह है। सारे सागर की मस बनाओ तो भी पूरा न हो। वो तो शास्त्र बनाए हैं जो पढ़ते आते हैं। एक घण्टा में भी सारी गीता पढ़ सकते हैं; परन्तु यह ज्ञान तो जां जीउ तां पीउ। जब मौत आए तो भी मुख में यह ज्ञान अमृत हो, शिवबाबा की याद हो। शान्तिधाम–सुखधाम याद हो तब प्राण तन से निकले। उन्होंने फिर गंगा तट बना दिया है। कहते हैं गंगा जल मुख में हो तब प्राण निकले। अभी पाणी से क्या होगा! बहुत लोग बनारस में जाते हैं मरने लिए। वहाँ काशी कलवट खाते थे, जिसको जीवघात कहा जाता है। आत्म घात नहीं। आत्मा का कोई घात नहीं होता। ..... आत्मा अपने शरीर को विनाश करते हैं उसको जीवघात कहा जाता। आत्मा तो अविनाशी है, कभी मरती–जलती नहीं। हाँ, बाकी शुद्ध और अशुद्ध होती है। मैली अथवा काली बन जाती है। तो कोई2 ऐसे शास्त्रों ... की बातें .... अटक डालते हैं। ... बोलो, वो है मनुष्यों की मत। यह है भगवान की श्रीमत। तुमको अगर मनुष्यों की मत पर चलना है तो इस मत पर चलो। अभी तो सभी का विनाश होना है। तुम्हारे वारिस भी खलास हो जावेंगे। ऐसे नहीं, बच्चा बड़ा हो तुम्हारा वर्सा पावेंगे। जैसे राजाओं की राजाई कायम रहती है ना। बहुत समय से चली आती है। राजाएँ तो हैं नहीं; परन्तु गवर्मेन्ट को कोई पैदा(पैसा) दे तो राजा का लकब भी दे देते हैं। नहीं तो राजाई खतम हुई तो राजा कहने की दरकार ही नहीं; परन्तु पैसे की बाज़ी है। एक सिंधी में पहाका देते हैं– हुजेई नाणो त धुम लाड़कानो। हम फिर कहते हैं– अविनाशी ज्ञान धन हो तो वैकुण्ठ घूम सकते हैं। तुम यहाँ सम्पत्ति के लिए पुरुषार्थ करते हो। राजाओं का राजा बनते हो। कितनी सम्पत्ति मिलती है। यह है ही राज्य योग। गीता से बरोबर स्वर्ग की स्थापना हुई। वो फिर गीता को द्वापर में ले गए हैं और नाम कृष्ण का डाल दिया है। एक तरफ वो गीता का ज्ञान दे, दूसरे तरफ फिर चीर चुरावे और उनको गाली मिले– यह कैसे हो सकता! कृष्ण यहाँ धरती पर पाऊँ(पाँव) धर न सके। उनका सिर्फ दिव्य दृष्टि से सा॰ होता है। ...ह भी समझने की बात है। कितनी गीताएँ बनाई हैं। अष्टावक्र की गीता भी है। राजा जनक को ज्ञान दिया वो फिर जाकर सीता का बाप बना। उनको कहा जाता है जनक .....सुता। जनक ने राम को ना॰ बनाया। राम भी यहाँ बना है। अब स्थापना हो रही है। ब्राह्मण कुल और सूर्यवंशी–चंद्रवंशी, तीन धर्मों की स्थापना हो रही है। इस समय ही जनक को ज्ञान मिला, जो फिर अनु जनक बनता है। जैसे मम्मा का नाम राधे है फिर अनुराधे बनती है, वैसे जनक भी त्रेता में जाकर जनकसुता बना। वो प्रालब्ध कहाँ से ली? यहाँ से। राम–सीता, जनक, ल०ना०, सभी ने प्रालब्ध यहाँ से पाई है। अभी राज्य योग सीख रहे हैं। तो गीता है एक, जो एक ही बार परमपिता प॰ सुनाते हैं, जि(स)से सतयुग की स्थापना होती है। पतित–पावन है ही गीता का भगवान शिव, न कि कृष्ण। गाँधी ने हाथ में गीता उठाई और फिर कहते थे– पतित–पावन सीता–राम। अभी वो तो थे त्रेता में। वहाँ तो पतित होते नहीं। तो राम–सीता को पतित–पावन कैसे कहेंगे! गीता एक की उठाई, नाम दूसरे का गाया। कितनी मूर्खता है! तुम बच्चियाँ होती तो एकदम अखबार में डालतीं। पतित को पावन, नर्क को स्वर्ग बनाना, यह तो प॰ का काम है। मनुष्य कर न सके। यहाँ भी शिवबाबा न होता तो तुम थोड़े ही होते। फिर तो यह अपने धंधे होता। इनमें शिव की प्रवेशता हुई है, जि(स)से तुम सभी वर्सा ले रहे हो। ब्राह्मण कुल वाले ही देवता कुल में जावेंगे। देवता धर्म वालों के ही सबसे जास्ती 84 जन्म हैं। यह सभी राज़ बाबा समझाते हैं। भारत ही कंगाल बना है, फिर बाप राज्य योग से सिरताज बनाते हैं। जगदम्बा–जगतपिता तपस्या कर रहे हैं 21 जन्म सदा सुखी बनने लिए। सदा शिव अमर है। वो पुनर्जन्म में नहीं आता और झोली भर देते हैं। उनको कहते हैं सदा शिव। बरोबर वो सदा अमर है। उनको अमरनाथ भी कहते हैं। शंकर को नहीं कहेंगे। उनका तो आकार

शरीर है। शंकर की भी आत्मा है ना। आत्मा फिर वापिस चली जावेगी। शिवबाबा का तो शरीर है नहीं। वो इसका लोन लेते हैं। यह शरीर तो इनका है ना। दुख इनकी आत्मा को होगा। शिवबाबा को जरा भी दुख नहीं हो सकता। वो थोड़े ही ऐसे कर्म करते हैं जो दुख हो। खाँसी, दर्द आदि इनकी आत्मा को होता है। बाबा कहते हैं, इनके कर्मभोग है। मैं तो कर्मातीत हूँ। यह ब्रह्मा कर्म बंधन में है जो अभी कर्मातीत बन रहे हैं। मैं तो सदा कर्मातीत हूँ। तो बाबा कितनी गुह्य बातें सुनाते हैं। कहाँ वो पाई–पैसे की गीता, कहाँ यह। तुम जां जिएँगी, तां पीती रहेंगी। बस, शिवबाबा की याद हो, सारा ज्ञान मुख में हो तब प्राण तन से निकले। वो पानी की गंगा तो सागर से निकलती है। ज्ञान गंगाएँ तो तुम हो। गंगा तट पर भी गंगा का मंदिर बनाया हुआ है। वो ज्ञान गंगा तुम हो। उन्होंने फिर पतित–पावनी पानी की गंगा को समझ लिया है। वो पानी की गंगा है भक्तिमार्ग के लिए। यह है ज्ञानमार्ग। आधाकल्प भक्ति में धक्का खाया है। पहले2 होती है शिव की पूजा। फिर ब्र०वि०शं० की, फिर ल०ना० की, फिर जगदम्बा की, जगतपिता की। अभी तो व्यभिचारी बन पड़े हैं। आर्यसमाजी की बात पहले बतलाई, तो उनको पण्डित ने कहा– कुत्ते–बिल्ले सभी में भगवान है। उसने कहा– क्या विष्टा में भी है प०? बोला– हाँ, विष्टा में भी प० है। अब क्या करना चाहिए। उस पण्डित को कहना चाहिए, यह लिखकर दो कि प० कुत्ते–बिल्ले, विष्टा आदि सभी में है। यह लिखकर दो तो हम यह नौकरी, सेक्रेटरी पणा छोड़ दूँ। कभी नहीं लिखकर देंगे। बाबा से राय पूछी है तो अब क्या करें। अब बाबा को तो ऑक्युपेशन का मालूम नहीं। यहाँ आवेगा, पहले तो बाबा कहेंगे– बरतन मांजो, काठी करो, यह करो; जैसे सन्यासी से कराते थे। यहाँ तो देह–अभिमान तोड़ना है ना। आगे बच्चियाँ सब कुछ अपने हाथ से करती थीं। अभी इतनी परीक्षा ली नहीं जाती है। देह–अभिमान तोड़ने लिए बाबा कुछ भी डायरैक्शन दे तो वो करना पड़े। इसलिए बड़े2 साहुकार तो आते नहीं। हम जानते हैं ड्रामा अनुसार राजधानी ज़रूर स्थापन होनी है। विकार की बात नहीं है। इसमें ज्ञान की पराकाष्ठा बहुत अच्छी चाहिए। इसलिए कचहरी भी होती है– कोई भूल तो नहीं की, बुरा वचन तो नहीं कहा। पाकिस्तान में कचहरी होती थी। जरा चीज़ छुपाकर खाई तो भूल बतानी पड़े, नहीं तो सौणा दंड हो जाता। फट से लिखना चाहिए– बाबा, यह भूल हुई तो आधा सज़ा कट हो जाय। बहुत मेहनत है। 21 जन्मों की राजाई मिलती है, क्या समझते हो। इसको कहा जाता है, जीते जी शूद्र कुल से मर ब्राह्मण कुल में आना। भूख मरने की तो बात नहीं। शिवबाबा का भण्डारा है। यहाँ झोली भरनी है ज्ञान रत्नों से। इम्तहान पूरा होगा तो फिर लड़ाई लग जावेगी। फिर बाबा भी न आवेगा, हम भी न रहेंगे। जिन्हों का कुछ हिसाब–किताब होगा वो रहेंगे। बाकी चले जावेंगे। जहाँ जीत वहाँ जाय जन्म लेंगे। इसको कहा जाता है– गोल्डन स्पून इन माऊथ। सो तो जिन्होंने कल्प पहले वर्सा लिया होगा वो ही आवेंगे। मालूम पड़ जाएगा, यह क्या पद पाने लायक है। राजाई पद पाने सरेण्डर होता है, ब(लि) चढ़ता है वा नहीं? यहाँ जीवघात की बात नहीं है। जीवघाती महापापी कहा जाता है।

यह है ईश्वरीय कॉलेज, जहाँ से राजाओं का राजा बनेंगे। यह भारत को सिरताज बनाते हैं गुप्त। यह है गुप्त सेना। तुम अननोन वॉरिअर्स का यह दिलवाला मंदिर यादगार बना हुआ है। कुंवारी कन्या, अधर कन्या सभी का यादगार है। कल्प पहले भी यहाँ तपस्या की है। नीचे में है आदिदेव, तपस्या में। ऊपर छत में है देवताओं के चित्र सोने के। कौड़ी से हीरे बने हैं ना; इसलिए छत में तुम देवताओं का वैकुण्ठ दिखलाया है। जगदम्बा यहाँ ज्ञान–ज्ञानेश्वरी है, फिर राज–राजेश्वरी बनेंगे। तुम्हारा यादगार सभी जगह है। फिर तुम सो ल०ना० बनेंगे, यह मंदिर खलास हो जावेंगे। तुम सभी का ऑक्युपेशन जानते हो। कितना ऊँच ज्ञान है। अच्छा! ॐ